NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

आधुनिक पालन-पोषण में पिता की भूमिका: बदलती भूमिकाएं और विकसित होती अपेक्षाएं

डॉ. आकांक्षा नंदन एवं रंजना

सारांश: -

पारंपरिक रूप से पिता को परिवार में एक अनुशासक और आर्थिक समर्थक की भूमिका में देखा जाता रहा है, लेकिन आधुनिक समाज में यह भूमिका तेजी से बदल रही है। अब पिता केवल 'कमाने वाले' नहीं, बल्कि वे संवेदनशील, भागीदार, और देखभाल करने वाले संरक्षक के रूप में उभर रहे हैं। यह लेख आधुनिक पालन-पोषण में पिता की बदलती भूमिका, उनके बच्चों के विकास में योगदान, पारिवारिक संरचनाओं पर प्रभाव और सामाजिक अपेक्षाओं के परिवर्तन का गहन विश्लेषण करता है। इसमें घरेलू, सामाजिक और शैक्षणिक संदर्भ में पिता की भागीदारी को समझने के लिए शोध, अनुभव और सांस्कृतिक बदलावों को शामिल किया गया है।

पारंपरिक बनाम आधुनिक पितृत्व की तुलना

पहलू	पारंपरिक भूमिका	आधुनिक भूमिका
आर्थिक योगदान	प्राथमिक ज़िम्मेदारी	साझा ज़िम्मेदारी
भावनात्मक जुड़ाव	सीमित, औपचारिक	गहरा, सहानुभूतिपूर्ण
घर के कामों में भागीदारी	न्यूनतम	सक्रिय, बराबर
बच्चों की परवरिश	अनुशासनकर्ता	मार्गदर्शक, सहभागी

इस परिवर्तन के पीछे शहरीकरण, शिक्षा का प्रसार, महिला सशक्तिकरण और बदलते सामाजिक दृष्टिकोण जैसे कई कारण हैं। आधुनिक पिता अब बच्चों के जीवन के हर पहलू में भागीदारी निभा रहे हैं।

बच्चों के जीवन में पिता की सक्रिय भागीदारी का महत्व

1. **भावनात्मक विकास**

➪ **आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान में वृद्धि:**

जब बच्चे यह महसूस करते हैं कि उनके पिता उन्हें समय, ध्यान और स्नेह देते हैं, तो उनमें आत्मविश्वास पनपता है। यह भावनात्मक जुड़ाव उन्हें सुरक्षित महसूस कराता है, जिससे वे कठिन परिस्थितियों का सामना दृढ़ता से कर पाते हैं।

डॉ. आकांक्षा[1] नंदन एवं रंजना[2]

[1]मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग

चंद्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर, 208002

[2]पीएचडी स्कॉलर मानव विकास एवं पारिवारिक अध्ययन विभाग

आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या 224229

➪ **भावनाओं को पहचानना और व्यक्त करना सीखते हैं:**

पिता यदि अपनी भावनाएं खुलकर व्यक्त करें तो बच्चे भी यह सीखते हैं कि संवेदनशीलता कमजोरी नहीं, बल्कि ताकत है।

2. शैक्षणिक प्रदर्शन

➪ **पढ़ाई में बेहतर रुचि और अनुशासन:**

जब पिता बच्चों की पढ़ाई में रुचि लेते हैं—जैसे होमवर्क में मदद करना या स्कूल के कार्यक्रमों में भाग लेना—तो बच्चे शिक्षा को अधिक गंभीरता से लेते हैं। अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ है कि पिता की शैक्षणिक भागीदारी बच्चों के ग्रेड, पढ़ने की क्षमता और समस्या-समाधान कौशल को बेहतर बनाती है।

➪ **सीखने की प्रेरणा:**

पिता जब ज्ञान के प्रति उत्साही होते हैं तो बच्चे भी प्रेरित होकर पढ़ाई और सीखने में रुचि दिखाते हैं।

3. समाजीकरण

➪ **मूल्य, अनुशासन और जिम्मेदारी की शिक्षा:**

पिता की जीवनशैली, नैतिक दृष्टिकोण, और व्यवहार से बच्चे जीवन के मूल्यों को आत्मसात करते हैं। वे सीखते हैं कि ईमानदारी, समय की पाबंदी, दूसरों के प्रति सम्मान जैसे गुण समाज में कैसे महत्त्व रखते हैं।

➪ **सकारात्मक सामाजिक व्यवहार:**

पिता के सहयोगी और आदर्श व्यवहार से बच्चे टीमवर्क, सहयोग, और सहानुभूति जैसे सामाजिक गुणों को आसानी से सीखते हैं।

4. लैंगिक समानता की समझ

➪ **समान अधिकारों और जिम्मेदारियों की शिक्षा:**

जब बच्चे यह देखते हैं कि उनके पिता रसोई, सफाई, या बच्चों की देखभाल जैसे घरेलू कार्यों में भाग लेते हैं, तो वे समझते हैं कि यह केवल महिलाओं की जिम्मेदारी नहीं है। इससे भविष्य में वे समानता के सिद्धांतों पर आधारित व्यवहार को अपनाते हैं।

➪ **भविष्य के रिश्तों में संतुलन:**

ऐसे बच्चे जब बड़े होकर अपने रिश्ते बनाते हैं तो वे अपने साथी के साथ समान रूप से जिम्मेदार व्यवहार करते हैं, जिससे स्वस्थ पारिवारिक जीवन की नींव पड़ती है।

कार्यस्थल और समाज में पिताओं के लिए बदलती अपेक्षाएं

➪ **पितृत्व अवकाश और लचीलापन**

अब कई संस्थाएं पिता को भी मातृत्व की तरह पितृत्व अवकाश दे रही हैं। इससे वे शिशु की देखभाल में सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं।

➪ **सामाजिक कलंक और अपेक्षाएं**

फिर भी, जब पुरुष 'हाउस हजबैंड' या पूर्णकालिक अभिभावक बनते हैं, तो उन्हें अभी भी समाज के पूर्वाग्रहों का सामना करना पड़ता है। यह सोच बदलने की आवश्यकता है।

➪ **कार्य-जीवन संतुलन में योगदान**

आधुनिक पिता अब कार्य और परिवार दोनों में संतुलन बिठाने का प्रयास कर रहे हैं। इससे न केवल परिवार मजबूत होता है बल्कि पुरुषों की मानसिक सेहत भी बेहतर होती है।

सह-अभिभावकता और घरेलू ज़िम्मेदारियों में भागीदारी

☞ **खाना बनाना, सफाई, बच्चों की देखभाल जैसे कार्यों में पिता की भागीदारी बढ़ी है।**

☞ **साझा निर्णय लेना (स्कूल चयन, चिकित्सा निर्णय आदि) अब माँ-पिता दोनों की जिम्मेदारी है।**

☞ **साप्ताहिक कार्यक्रम:**

कार्य	पिता की भागीदारी
स्कूल ड्रॉप/पिकअप	60% पिता करते हैं
होमवर्क सहायता	50% पिता नियमित रूप से करते हैं
बच्चों के लिए खाना बनाना	35% पिता करते हैं

इससे बच्चों के साथ संबंधों में प्रगाढ़ता आती है और घरेलू कार्यों का भार समान रूप से बंटता है।

नीतिगत बदलाव और पितृत्व को सशक्त बनाने के उपाय

1. **नीतियाँ और कानून**

⇨ **पितृत्व अवकाश को अनिवार्य और भुगतानयुक्त बनाया जाए**

☞ अधिकतर देशों में मातृत्व अवकाश तो प्रचलित है, परंतु पितृत्व अवकाश या तो सीमित है या पूरी तरह से गैर-लाभदायक।

☞ अनिवार्य और भुगतानयुक्त पितृत्व अवकाश से न केवल पिता को बच्चे के प्रारंभिक विकास में भागीदारी मिलती है, बल्कि यह लैंगिक समानता को भी बढ़ावा देता है।

☞ इससे परिवार में साझा जिम्मेदारी की भावना और बच्चों के साथ मजबूत भावनात्मक जुड़ाव विकसित होता है।

⇨ **कार्यस्थल पर परिवार-हितैषी नीतियों को बढ़ावा दिया जाए**

☞ लचीले कार्य समय (flexible working hours), वर्क-फ्रॉम-होम विकल्प, और चाइल्ड केयर सुविधाएँ जैसे उपायों को अपनाना।

☞ ऐसे नीतिगत उपाय न केवल माता-पिता के संतुलन को आसान बनाते हैं, बल्कि उत्पादकता और कर्मचारियों की संतुष्टि में भी वृद्धि करते हैं।

☞ कार्यस्थलों पर पिताओं को उनकी पारिवारिक भूमिकाओं के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

2. **जन-जागरूकता अभियान**

⇨ **मीडिया में सकारात्मक पिताओं की छवि को प्रस्तुत करना**

☞ फिल्मों, टीवी शो, विज्ञापनों और सोशल मीडिया के माध्यम से ऐसे पिता दिखाए जाएँ जो संवेदनशील, देखभाल करने वाले और बच्चों के जीवन में सक्रिय हों।

☞ इससे सामाजिक मान्यताओं में बदलाव आता है और यह संदेश जाता है कि पिता की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी माता की।

⇨ **स्कूलों और सामाजिक संस्थाओं में पितृत्व कार्यशालाओं का आयोजन**

☞ अभिभावक-शिक्षक बैठकों या सामुदायिक कार्यक्रमों में विशेष सत्र रखे जाएँ जहाँ पिताओं को बच्चों की शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य, और व्यवहारिक विकास में उनकी भूमिका के बारे में जागरूक किया जाए।

☞ इन कार्यशालाओं से पिताओं को न केवल जानकारी मिलती है, बल्कि उन्हें सक्रिय भूमिका निभाने की प्रेरणा भी मिलती है।

3. **शैक्षिक पाठ्यक्रम में पितृत्व की भूमिका को शामिल करना**

⇨ **नैतिक शिक्षा और सामाजिक विज्ञान में 'समान पितृत्व' पर अध्याय शामिल करना**

- बच्चों को प्रारंभिक स्तर पर ही यह सिखाना कि माता और पिता दोनों की भूमिका महत्वपूर्ण है।
- पाठ्यक्रम में ऐसे उदाहरण और केस स्टडीज़ लाए जाएँ जो पितृत्व की संवेदनशीलता और ज़िम्मेदारियों को उजागर करें।
- यह भविष्य की पीढ़ियों में लैंगिक समता, सहयोग, और समझ की नींव रखेगा।

निष्कर्ष

आज के समाज में पिता की भूमिका मात्र 'पालक' की नहीं रही, बल्कि वे बच्चों के विकास में एक सशक्त, सहानुभूतिपूर्ण और भावनात्मक रूप से संलग्न संरक्षक बन गए हैं। बदलते सामाजिक ढांचे, नीतियों और जागरूकता ने पितृत्व की परिभाषा को नया रूप दिया है। भविष्य की पीढ़ियों को संवेदनशील, उत्तरदायी और समानतावादी नागरिक बनाने में पिता की भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। समाज को चाहिए कि वह इस नई भूमिका को स्वीकारे, प्रोत्साहित करे और उसे सशक्त बनाने हेतु उपयुक्त वातावरण तैयार करे।

NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE